ISSN:2583-8849



मनशाह "नायक"

जोधपुर, राजस्थान

1

उससे अपना दिल टकराकर समझा था
पत्थर ही था जिसको पत्थर समझा था

साहिल से तिश्ना लौटाने वाले सुन
तुझको मैने एक समन्दर समझा था

आख़िर वो भी सबके जैसा ही निकला
जिसको मैंने सबसे हटकर समझा था

ख़ुद से मिलकर आज हक़ीक़त जाना मैं
अन्दर है वो जिसको बाहर समझा था

मेरे घर तक आते आते सूख गई
जिसको मैंने बहती घग्घर समझा था

दिल की दुनिया इक तातारी लूट गया
मैं रहजन को अपना रहबर समझा था

प्यार हमारा एक इबादत था "नायक"
भोजन भोग भजन से ऊपर समझा था

2

सूरज का सरमाया पाकर जब देखो इतराई धूप
ज़ीनों से छत पर चढ़ते ही लेती है अँगड़ाई धूप

शाम ढले घर से निकली थी बिन बोले हरजाई धूप
पूछा रात कहां थी इस पर देने लगी सफाई धूप

मैंने खुद अपने को उसदिन हद से ज़्यादा खुश देखा
मेरी जानिब जब देखा और हल्क़ी सी मुस्काई धूप

क्या जाने मेरी आँखों में उसने ऐसा क्या देखा
ढाँप लिया हाथों से चेहरा मन ही मन शरमाई धूप

होले से आँगन में आई आँगन से गलियारे में
लेकिन कमरे में आने से जाने क्यूँ घबराई धूप

मेरे बाबूजी के सर पर जाने कितना क़र्ज़ हुआ
मुट्ठी भर उजियारा लेकर तब मेरे घर आई धूप

पानी पानी होकर "नायक" पानी मांगा पानी ने
नाफ़ कमर सीना और जुल्फें सब ने जब बरसाई धूप